an>

title: Need to establish a Breeding Centre for cows in Nagaur, Rajasthan.

श्री सी.आर.चौधरी (नागौर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको धन्यवाद अर्पित करना चाहूंगा कि आपने मेरे क्षेत्र के महत्वपूर्ण विषय के बारे में बोलने का मौका दिया। मैं नागौर राजस्थान से आता हूं। नागौर राजस्थान का हार्टलैंड है। यहां की जो अर्थव्यवस्था है, वहां मुख्य रूप से 80 परसेंट लोग कृषि और पशुपालन पर डिपेंड कर रहे हैं। पशुपालन एक तरह से वहां का मुख्य धन्धा है।

मैं पशुपालन पर ही बात करना चाहता हूं। नागौर की जो देसी गायों की ब्रीड है, वह नागौरी ब्रीड के नाम से जानी जाती है। नागौरी गायों की जो नस्ल है, वह पूरे भारत में प्रसिद्ध है। नोर्थ इंडिया में विशेष रूप से नागौर के बछड़े और बैल पूरे यू.पी., हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, यहां पर खेती के लिए इन बैलों को काम में लिया जाता था और आज भी लिया जा रहा है। नागौरी नस्ल की जो गाय है, वह अपने दूध के लिए ज्यादा नहीं जानी जाती, बल्कि अपने बहुत अच्छे बछड़े, जो हल जोतने और बोझा ढोने के काम में आते हैं, बहुत फुर्तीले होते हैं और बहुत ही स्टाउट होते हैं। अब क्या हुआ है कि फार्मिंग के मकेनाइजेशन के बाद प्लस बछड़ों के जो पहले मेले भरते थे, आसपास के राज्यों के लोग, जो खासकर उन्हें वहां खरीदने आते थे, वह बन्द हो रहा है। इसका कारण है कि बछड़ों के ऊपर तीन साल तक प्रतिबन्ध है कि कोई भी बछड़ा बाहर नहीं जा सकता। जब तीन साल का बछड़ा हो जाता है तो उसके बाद में उसकी कीमत और घट जाती है, क्योंकि, 18 महीने से दो वर्ष के बछड़े की ही अच्छी कीमत है। मकेनाइजेशन के कारण और बछड़ों के विक्रय पर प्रतिबन्ध के कारण वहां गायों की बहुत दुर्दशा हो रही है और इसलिए मैं आपके मार्फत एग्रीकल्चर मिनिस्टर से निवेदन करना चाह रहा हूं कि नागौरी नस्ल की गाय को बचाना आवश्यक है। अभी हाल ही में प्रधानमंत्री जी ने देसी नस्ल के संवर्धन के लिए एक प्रोजैक्ट की घोषणा की है, जिसे भारत सरकार लाई है, जिसमें 500 करोड़ रुपये का बजट है। मैं आपके मार्फत माननीय कृषि मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जिस क्षेत्र की गायें नागौरी नस्ल की गायें, जो इतनी प्रसिद्ध है, उनके लिए एक कैटल ब्रीडिंग सैण्टर नागौर में स्थापित किया जाये, ताकि नागौरी नस्ल को बचाया जा सके।

साथ ही मैं मंत्री जी से यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि जो बछड़ों के ऊपर तीन साल तक विक्रय पर और बाहर ले जाने पर रोक है, उसे दो साल किया जाये। अगर बछड़े बाहर जाएंगे तो गायों को लोग पालना शुरू करेंगे, अच्छे ढंग से पालेंगे और इनका संवर्धन होगा।

आपने बोलने का समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Gajendra Singh Shekhawat and Shri P.P. Chaudhary are permitted to associate with the issue raised by Shri C.R. Chaudhary.